لا اله الا الله محمد رسول الله

पैग़ामे इंसानियत

हस्बे फ़रमाइश

क़ाइदे मिल्लत अल्लामा मौलाना अबुलमुख़्तार सैयद

मोहम्मद महमूद अशरफ अशरफी जीलानी

सज्जादा नशीन आस्ताना आलिया अशरफिया दरगाह किछौछा शरीफ

सहायकगण

मौलाना क़मरे आलम अशरफी जामेई उस्ताद जामे अशरफ

मुफ्ती मोहम्मद नियाज़ अहमद अशरफी मिस्बाही

Ahle Sunnat
RESEARCH CENTRE
اہل سنت ریسرچ سینٹر

Affiliated with:
AS SYED MAHMOOD ASHRAF
DARUL TEHQEEQ WA AL TASNEEF
السید محمود اشرف دار التحقیق والتصنیف

₹55

अर्ज़े नाशिर

(प्रकाशक निवेदन)

हर मोमिन को यह बात अपने दिलो दिमाग़ में हमेशा तरो ताज़ा रखनी चाहिये कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने क़ौमे मुसलिम को ''उम्मत का दाई'' (लोगों को हक़ की तरफ़ बुलाने वाला) बनाया है और उसके मुक़ाबिले में इस दुनिया में अबाद दूसरी तमाम क़ौमें ''मदऊ उम्मत'' (हक़ की तरफ़ बुलाई जाने वाली क़ौमें) क़रार पाईं। इसलिए उम्मते मुसलिमा के हर फ़र्द (जन) की एक साथ दो बड़ी ज़िम्मेदारियाँ होती हैं, पहली तो यह कि हम ''उसवये हसना'' (पैग़म्बरे इंसानियत का बेहतरीन नमूने) से एक क़दम आगे न हों और दूसरी यह कि हुज़ूर ﷺ की मुबारक ज़िन्दगी और आप की रौशन तालीमात को ख़ूब फैलायें।

अभी हाल ही में **'कमलेश तिवारी'** की जानिब से तौहीने रसूल का मसअला सामने आया तो पीरे तरीक़त क़ायदे मिल्लत हज़रत अल्लामा अलहाज सय्यद शाह अबुल मुख़्तार **मोहम्मद महमूद अशरफ़** अशरफ़ी जीलानी सज्जादा नशीन आस्तानये मख़दूम अशरफ़ सिमनानी कछौछा मुक़द्दसा ने बड़े मुसबत (सकारात्मक) अंदाज़ में यह बात फ़रमाईः

''बहुत से ग़ैर मुसलिम नुबुव्वत का मक़ाम व मन्सब नहीं जानते हैं, वह हुज़ूर ﷺ की ख़ूबियों और बेदाग़ ज़िन्दगी से बिलकुल बे ख़बर है और इंसानियत की कामयाबी व तरक़्क़ी, इसानी समाज की भलाई और बक़ा के बारे में आख़िरी पैग़म्बर ﷺ की तालीमात से बिलकुल ही नावाक़िफ़ (अज्ञानी) हैं। इसलिये हमें उनको अपने क़रीब करना चाहिए, हम अपने जलसों में उन्हें बुलायें और छोटी–छोटी किताबें अलग–अलग ज़बानों (भाषाओं) में तरतीब देकर उनके दरमियान बाँटें।''

उसके साथ ही आपने जामे अशरफ़ के कुछ असातिज़ा (अध्यापकों) को बड़ी तेज़ी के साथ एक छोटी सी किताब को तरतीब देने का हुक्म फ़रमाया जिसमें हुज़ूर ﷺ की मुख़्तसर ज़िन्दगी हो और इंसानी समाज की अम्न व सलामती, हिफ़ाज़त व बक़ा और भलाई को शामिल आपकी तालीमात का ख़ुलासा हो।

अलह़म्दो लिल्लाह यह छोटी सी किताब **'पैग़म्बरे इंसानियत'** के नाम से पढ़ने वालों के हाथों में है और जिसे अहले सुन्नत रिसर्च सेंटर (ARC) मुम्बई उर्दू, हिन्दी और अंग्रेज़ी में शाये (प्रकाशित) करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा है।

'जार्ज बरनाडशो' ने दूसरी बड़ी जन्ग के ख़ातिमे पर कहा थाः

''दुनिया की क़यादत की लगाम अगर ऐसे आदमी के हाथ में आ जाए जो मुस्तफ़ा जाने रह़मत ﷺ के बेहतरीन तरीक़े का पैरोकार (अनुयायी) हो तो इस दुनिया से ज़रूर तमाम मसाइल और मुश्किलात का ख़त्मा किया जा सकता है।''

हम अपने तमाम ग़ैर मुसलिम भाइयों को दावत देते हैं कि वह इस्लाम के क़रीब आयें, उसे समझें, मोह़म्मदुर्रसूलुल्लाह ﷺ की पाक ज़िन्दगी पढ़ें और नुबुव्वत व रिसालत का मक़ाम जानें। इसमें उनके लिए इस दुनिया में भी भलाई है और मरने के बाद जो ज़िन्दगी आने वाली है वहाँ बड़ा इत्मिनान और सुकून है।

''अल्लाह सलामती के घर की तरफ़ बुलाता रहा है और जिसे चाहता सीधे (सच्चे) रास्ते की हिदायत देता है।''

(कुरआने करीम)

अलहाज अय्यूब पँजवानी अशरफ़ी
अलह़ाज ह़ाफ़िज़ हुसामुद्दीन अशरफ़ी (ख़तीब शहरे नासिक)
अलह़ाज असलम आदम सुराठिया अशरफ़ी
अराकीने अहले सुन्नत रिसर्च सेंटर मुम्बई नासिक

بسم اللہ الرحمن الرحیم

पैग़म्बरे इंसानियत ﷺ की ज़िन्दगी पर एक सरसरी नज़र

पैग़म्बरे इन्सानियत ह़ज़रत मोह़म्मद मुस्तफ़ा ﷺ 12, रबीउल अव्वल शरीफ़ मुताबिक़ 22, अप्रैल 571 ई0 सोमवार के दिन ठीक सुब्हे सादिक़ के वक़्त अरब देश के एक नगर **मक्कतुल मुकर्रमा** में पैदा हुए। आस्मानी बशारत के मुताबिक़ आप का नाम **मोह़म्मद** रखा गया।

आपके वालिद ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्दुल मुत्तलिब आपकी पैदाइश से कुछ माह पहले इन्तिक़ाल कर गए। वालिदा का इन्तिक़ाल भी उस वक़्त हुआ जब आपकी उम्र शरीफ़ सिर्फ़ छः साल थी। अब आपके सरपरस्त आपके दादा ह़ज़रते अ़ब्दुल मुत्तलिब इब्ने हाशिम थे। लेकिन दो साल बाद वह भी इस दुनिया से कूच कर गए। फिर आपकी सरपरस्ती आपके चचा अबू तालिब इब्ने अ़ब्दुल मुत्तलिब के ह़िस्से में आई। मगर हिजरत से तीन साल पहले आप ﷺ के सख़्त ह़ालात में वह भी इस दुनिया से रुख़्सत हो गये।

फितरत (प्रकृति) से आपने बड़ी शानदार और रोबदार शख़्सियत पाई थी। बचपन में ही आपको देखने वाले पुकार उठे कि इस बच्चे का मुस्तक़बिल (भविश्य) बड़ा अज़ीम (महान) है। जब बड़े हुए तो आपके जाहो जलाल और रोबो वक़ार के ह़ाल को ह़ज़रते मौला अ़ली कर्रमल्लाहो तआ़ला वजहहुल करीम बयान करते हैं कि जो आपको पहली बार देखता मरऊब हो जाता, जो साथ बैठता वह आपसे मह़ब्बत करने लगता।

हुज़ूर ﷺ के चेहरये मुबारक, क़द व क़ामत, ख़द्दो ख़ाल, चाल ढाल, और वजाहत का जो अ़क्से जमील सदियों के परदों

से छन कर हम तक पहुँचा है वह एक ऐसे इंसाने कामिल का तसव्वुर दिलाता है जो ज़िहानत व फ़तानत, सब्र व पायदारी, सच्चाई व ईमानदारी, आ़ला ज़रफ़ी, सख़ावत, ज़िम्मेदारी, वक़ार व इन्किसारी और फ़साह़त व बलाग़त जैसी क़ाबिले तारीफ़ खूबियों का संगम था। बल्कि यूँ कहा जाए कि आपके जिस्मानी नक्शे में रुह़े नुबुव्वत का परतौ देखा जा सकता है और आपकी वजाहत खुद आपके मुक़द्दस मक़ाम की एक दलील है। आप ﷺ को देखने वालों में अ़ब्दुल्लाह इब्ने सलाम का बयान है कि ''मैंने जूँ ही हुजूर को देखा फ़ौरन समझ लिया कि यह चेहरा किसी झूटे का चेहरा नहीं हो सकता'' अबू रमसा तैमी कहते हैं:

> ''मैं अपने बेटे को साथ लेकर हाज़िरे ख़िदमत हुआ, लोगों ने दिखाया कि यह खुदा के रसूल हैं, देखते ही मैंने कहा वाक़ई यह अल्लाह के नबी हैं।''

एक मोअ़ज़्ज़ज़ ख़ातून बयान करती हैं:

> ''मुत़मइन रहो मैंने उस शख़्स का चेहरा देखा है जो चौध ावीं रात के चाँद की तरह़ रौशन था, वह तुम्हारे साथ ग़लत मुआ़मला करने वाला नहीं हो सकता। अगर ऐसा आदमी ऊँट की रक़म अदा न करे तो मैं अपने पास से अदा कर दूँगी।''

खुलासा यह कि आप की ज़ात इंसानी ज़िन्दगी की आ़ला तरीन नमूना थी जिसको नफ़िसयात (मनोवैज्ञानिकता) की इस्तिलाह़ (परिभाषा) में मुतावाज़िन (दरमियानी) शख्सियत कहा जाता है। दाऊद बिन हुसैन कहते हैं कि अरब के लोग आ़म तौर पर यह कहा करते थे कि ह़ज़रत मोह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह इस शान से जवान हुए कि आप अपनी क़ौम में सबसे ज़्यादा अख़लाक़ वाले, पड़ोसियों की खबर गीरी करने वाले, ह़लीम व बुर्दबार, सादिक़ व अमीन, फ़ह़श गोई और गाली गलौच से बचने वाले थे। इसी वजह से अहले मक्का ने आपका नाम **''अल–अमीन अल–सादिक़''** (अमानतदार और हमेशा सच बोलने वाले) रखा था।

25, साल की उम्र में आपने मक्के की एक चालीस साल की बेवा ख़ातून सय्यदा खदीजतुलकुब्रा रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हा से निकाह़ फ़रमाया। जब आपने शादी की तो उस मौक़े पर आपके चचा जनाबे अबूतालिब ने निकाह़ के खुत्बे में आपका तआ़रुफ़ (परिचय) इन लफ्ज़ों में कराया:

''यक़ीनन मेरे भतीजे मोह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह का मुक़ाबला जिस शख़्स से किया जाए, यह शराफ़त व नजाबत, बड़ाई और अक़्ल में उससे बढ़ जाएगा। ख़ुदा की क़सम उसका मुस्तक़बिल (भविष्य) बड़ा और उसका मक़ाम व मरतबा बुलन्द होगा।''

आप ﷺ की तीन नरीना औलादें यानी लड़के पैदा हुए जो बचपन ही में इंतिक़ाल कर गये। चार साह़बज़ादियां बड़ी उम्र को पहुँचीं। चारों ह़ज़रते ख़दीजा के बतन (पेट) से थीं। ह़ज़रते फ़ातिमा रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हा आपकी सबसे छोटी साह़बज़ादी थीं, आप उनसे बेह़द मह़ब्बत फ़रमाते थे। किसी सफ़र से वापस होते तो मसजिद में दो रकअ़त नमाज़ अदा करने के बाद सबसे पहले ह़ज़रते फ़ातिमा के घर जाते, उनके हाथ और पेशानी चूमते। एक सह़ाबी ने ह़ज़रते आ़यशा रज़ियल्लहो तआ़ला अ़न्हा से दरयाफ़्त किया कि हुज़ूर ﷺ को सबसे ज़्यादा मह़बूब कौन था? उन्होंने जवाब दिया: फ़ातिमा। मगर आप ﷺ के नज़दीक औलाद से मह़ब्बत करने का क्या मतलब था? इसका अंदाज़ा ह़ज़रते अ़ली कर्रमल्लाहो वजहहुल करीम की एक रिवायत से लगाया जा सकता है जो सिह़ाह़े सित्ता की तमाम किताबों में मौजूद है।

ह़ज़रते अ़ली फ़रमाते हैं:

''फ़ातिमा का यह ह़ाल था कि चक्की पीसतीं तो हाथ में छाले पड़ जाते। पानी की मशक उठाने की वजह से गरदन में निशान पड़ गया था, झाड़ू देतीं तो कपड़े मैले हो जाते। उन्हीं

दिनों में नबी ﷺ के पास कुछ ख़ादिम आये, मैंने फातिमा से कहा तुम अपने वालिद के पास जाओ और अपने लिए एक ख़ादिम माँगो, फ़ातिमा गईं मगर वहाँ हुजूम था, आप मिल न सकीं, दूसरे दिन हुजूर हमारे घर तशरीफ़ लाये और दरयाफ्त किया फ़ातिमा क्या ज़रूरत थी? फ़ातिमा ख़ामोश हो गईं, मैंने क़िस्सा बताया और यह भी कहा कि मैंने उनको आपके पास भेजा था। आपने सुनने के बाद फ़रमायाः ऐ फ़ातिमा खुदा से डरो, अपने रब के फ़राइज़ अदा करो, अपने घर का काम करो, जब बिस्तर पर जाओ तो 33, बार सुब्हानल्लाह, 33, बार अल्हम्दुलिल्लाह और 34, बार अल्लाहो अकबर पढ़ लिया करो यह तुम्हारे लिये ख़ादिम से बेहतर है। फ़ातिमा ने सुन कर कहा कि मैं खुदा और उसके रसूल से खुश हूँ।''

जब आप ﷺ की उम्र शरीफ़ 40, वर्ष की हुई तो 17, रमज़ानुल मुबारक मुताबिक़ 10, अगस्त 610 ई0 सोमवार के दिन आप पर पहली वह्री नाज़िल हुई। और सबसे पहले जो लोग आप पर ईमान लाए और आपको नबी व रसूल की हैसियत से क़बूल किया वह आपकी बीवी ह़ज़रते ख़दीजा, आपके सबसे क़रीबी दोस्त हज़रते अबूबक्र सिद्दीक़, आपके चचा ज़ाद भाई ह़ज़रते अ़ली और आपके ग़ुलाम ह़ज़रते ज़ैद इब्ने हारिसा थे।

आप 13, बरस तक मक्कतुल मुकर्रमा में दावते हक़ की सदा बुलन्द करते रहे, आपकी क़ौम ने आप पर बड़ा ज़ुल्म किया, आपके रास्ते में काँटे बिछाये, आपका समाजी बाइकाट किया, आपके साथियों को बेपनाह तकलीफ़ें दीं और मक्के की सर ज़मीन उनपर तंग कर दी, यहां तक कि जब आपकी उम्र शरीफ़ मुकम्मल 53, बरस हो गई तो अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने मदीनये तय्यिबा की जानिब हिजरत करने का हुक्म फ़रमाया। आप अपने मह़बूब तरीन दोस्त ह़ज़रते अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो के साथ 12, रबीउ़ल अव्वल शरीफ़

मुताबिक़ 27, सितम्बर 622 ई0 जुमे के दिन मदीनये तय्यिबा पहुँचे। पूरा मदीना आबादी के बाहर उमंड आया और क़बीलये बनू नज्जार की बच्चियों ने इन अशआ़र के साथ आपका शान्दार इस्तिक़बाल कियाः

तर्जमाः

''विदा की पहाड़ियों से हमारे ऊपर चौधवीं का चाँद निकल आया। हम पर शुक्र वाजिब है (इस बात का) कि एक पुकारने वाले नें अल्लाह के लिए पुकारा।''

आप ﷺ की ज़िन्दगी बड़ी सादा थी अज़मत के इंतिहाई आ़ला मक़ाम पर फ़ाइज़ होने के बावुजूद आ़म इंसानों की तरह ज़िन्दगी गुज़ारते थे। ह़ज़रते आयशा फ़रमाती हैं कि हुजूर घर में एक आ़म आदमी की तरह होते, अपनी ज़रूरतें खुद ही पूरी करते, बकरियों का दूध दोहते, कपड़ों में पैवन्द लगाते, अपने जूते खुद गाँठ लेते, बोझ उठाते, जानवरों को चारा डालते, ख़ादिमों का हाथ बटाते, खुद ही सौदा सुलफ़ लाते और ज़रूरत की चीजें एक कपड़े में बांध कर उठा लाते।

आप ﷺ का अख़लाक बहुत ही करीमाना था। मज़लूमी में सब्र, मुक़ाबिले में अ़ज़्म (मज़बूत इरादा), मुआ़मले में रास्त बाज़ी (सच्चाई) और ताक़त व इख्तियार में अ़फ्व व दरगुज़र (मआ़फ़ व नज़र अंदाज़ कर देना) और भाई चारगी तारीख़े इंसानी की वह अनोखी खूबियां हैं जो किसी एक ज़िन्दगी के अंदर इस तरह कभी जमा नहीं हुईं जो आप ﷺ के अंदर रब ने जमा फ़रमा दी थीं। आप का मामूल था कि रास्ते में मिलने वालों से सलाम करने में पहल करते, किसी को पैग़ाम भिजवाते तो साथ ही सलाम ज़रूर कहलवाते। बच्चों की टोली के पास से गुज़रते तो उनको सलाम करते। घर में दाख़िल होते और निकलते वक़्त घर वालों को सलाम करते। लोगों से मुसाफ़ह़ा और मुआ़नक़ा

करते और अपना हाथ उस वक्त तक न खींचते जब तक दूसरा खुद ही अपना हाथ अलग न करता। किसी मजलिस में जाते तो किनारे ही बैठ जाते। कँधों पर से छलाँग लगाकर बीच में दाख़िल होने से बचते। ह़ज़रते आ़यशा फ़रमाती हैं कि आप अपने ज़ानू साथियों से बढ़ा कर कभी न बैठते। कोई आता तो इ़ज़्ज़त देने के लिए अपनी चादर बिछा देते। आने वाला जब तक खुद न उठता आप मजलिस से अलग न होते। किसी की मुलाक़ात को जाते तो दरवाज़े के दाएँ बाएँ खड़े हो कर ख़बर देते और इजाज़त लेने के लिए तीन मरतबा सलाम करते, जवाब न मिलने पर बग़ैर किसी बद गुमानी के वापस चले आते। बद सुलूकी का बदला बुरे सुलूक से न देते बल्कि नज़र अंदाज़ करने से काम लेते। दूसरे के कुसूर माफ़ कर देते और मआ़फ़ी की खबर देने के साथ अपना इ़मामा भेजते जो इस बात की निशानी होता कि आपने उसे मआ़फ़ कर दिया है। घर या बाहर वालों में से या साथियों में से कोई पुकारता तो हमेशा लब्बैक कहते। ह़ज़रते उमरे फ़ारूक़ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने तीन मरतबा हुजूर ﷺ को सिर्फ़ आवाज़ लगाई उसने कुछ कहा नहीं मगर हुजूर ने हर बार लब्बैक कहा यानी मैं ह़ाज़िर हूँ, ह़ाज़िर हूँ, हाज़िर हूँ। (मुसनदे अबू याला)

दोस्त व दुश्मन कोई भी बीमार पड़ता तो उसकी अ़यादत (मिज़ाज पुर्सी) के लिए तशरीफ़ ले जाते। सरहाने बैठ कर पूछते ''तुम्हारी तबीअ़त कैसी है?'' बीमार की पेशानी और नब्ज़ पर हाथ रखते। कभी सीने और पेट पर शफ़क़त का हाथ फेरते। खाने को पूछते। बीमार अगर किसी चीज़ की ख़्वाहिश करता अगर वह नुक़सान देनी वाली न होती तो मंगवा देते। तसल्ली देते और फ़रमाते कि घबराओ मत इंशाअल्लाह जल्द ठीक हो जाओगे। शिफ़ा के लिए दुआ़ फ़रमाते। मुश्रिक चचाओं और

बच्चों की बीमार पुर्सी को भी जाते। एक यहूदी बच्चे की भी आपने बीमार पुर्सी की है। (जो बाद में ईमान ले आया था) जब किसी की वफ़ात हो जाती तो तशरीफ़ ले जाते, कलिमये तौहीद की तलक़ीन फ़रमाते। मय्यित के मिलने वालों और रिश्तेदारों से महदर्दी का इज़हार करते। सब्र की नसीहत करते और चीख़ने चिल्लाने से रोकते। तजहीज़ व तकफ़ीन (जनाज़ा तय्यार कारने और कफ़न दफ़न में) जल्दी कराते। जनाज़े के साथ चलते। नमाज़े जनाज़ा ख़ुद पढ़ाते और मग़फ़िरत की दुआ करते। मुसलिम और ग़ैर मुसलिम किसी का भी जनाज़ा गुज़रता खड़े हो जाते। लोगों को तलक़ीन फ़रमाते कि मय्यित के घर वालों के लिए खाना पकवा कर भिजवाएँ।

कोई सफ़र से वापस आता तो उससे मुआनक़ा करते और पेशानी चूमते। किसी को सफ़र के लिए रुख़सत करते तो कहते हमें भी दुआओं में याद रखना।

बच्चों से बहुत ज़्यादा प्यार करते, सर पर हाथ फेरते, शीर ख़्वार (दूध पीने वाले) बच्चे लाऐ जाते तो उनको गोद में ले लेते, उनको बहलाने के लिए अ़जीब अ़जीब कलिमे कहते। एक बच्चे को बोसा देते हुए फ़रमायाः ये बच्चे तो ख़ुदा के बाग़ के फूल हैं। बच्चों के अच्छे नाम चुनते, बच्चों की लाइन लगाकर दौड़ करवाते कि देखें कौन हमें पहले छूता है? बच्चे दौड़े हुए आते तो कोई सीने पर और कोई शिकमे मुबारक पर गिरता। फिर इनआ़म तक़सीम फ़रमाते।

बूढ़ों का एहतिराम फ़रमाते: फ़त्हे मक्का के मौक़े पर हज़रते अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो अपने ज़ईफ़ुल उ़म्र वालिद को इस्लाम की बैअ़त के लिए आपकी ख़िदमत में लाए। आपने फ़रमाया कि इन्हें क्यों तकलीफ़ दी? मैं ख़ुद इनके पास चला आता।

आपके बेहतरीन किरदार की तस्वीर आपके ख़ादिम ह़ज़रते अनस रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो ने ख़ूब खींची है। वह फ़रमाते हैं:

''मैं दस बरस तक हुज़ूर ﷺ की ख़िदमत में रहा इस लम्बी मुद्दत में कभी आपने उफ़ न कहा और न कभी यह फ़रमाया कि ऐ अनस तुमने ऐसा कयों किया? या यह काम क्यों छोड़ दिया?.....''

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने आप ﷺ वसल्लम को बुलन्द मक़ाम अ़ता फ़रमाया था मगर इसके साथ ही आप बहुत ही तवाज़ो करने वाले इन्केसारी करने वाले थे, आप इस बात को बिल्कुल पसंद नहीं फ़रमाते कि रास्ते में आगे–आगे आप हों और आपके पीछे दो लोग चल रहे हों। ह़ज़रते जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो फ़रमाते हैं कि एक बार एक शख़्स आपकी ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और आपके जाहो जलाल को देखकर काँपने लगा, हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया ऐ शख़स ख़ुद को क़ाबू में रख और सुन, मैं कुरैश की उस ख़तून का बेटा हूँ जो वदिये मक्का में सूखा गोश्त खाया करती थी। (मुस्तदरके ह़ाकिम)

आप उमूमन फ़रमाया करते थेः मैं इस तरह़ खाता हूँ जिस तरह़ एक ग़ुलाम खाता है और मैं इस तरह़ बैठता हूँ जिस तरह़ एक ग़ुलाम बैठता है। (शोबुल ईमान) आप अपने साथ इम्तियाज़ी सुलूक को कभी पसंद न फ़रमाते थे। एक बार आपने सफ़र में अपने साथियों से एक बकरी तयार करने का हुक्म दिया, एक शख़्स ने कहा मैं उसे ज़िबह करूँगा, दूसरे ने कहा मैं उसकी खाल उतारूँगा, एक और शख़्स ने कहा मैं उसे पकाऊँग, आप ﷺ ने फ़रमाया मैं लकड़ी जमा करूँगा, लोगों ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल! हम सब काम कर लेंगे तो आपने फ़रमाया मैं इम्तियाज़ को पसंद नहीं करता।

मस्जिदे नबवी की तामीर और ख़न्दक की खुदाई के दौरान अपने सह़ाबा के साथ आप भी ईंटें उठा रहे थे और शेर

गुनगुना रहे थे जिसका तर्जमा हैः

''ज़िन्दगी तो आख़िरत की ज़िन्दगी है। ऐ! अल्लाह मुहाजेरीन और अन्सार की मग़फ़िरत फ़रमा।''

आप ﷺ शफ़्क़त और रह़म करने वाले थे। बेवाओं, यतीमों, कमज़ोरों, बेसहारों, मजबूरों और ग़म के मारों का बड़ा ख़्याल रखते थे। कमज़ोरों की मदद फ़रमाते, ह़ाजतमंदों की ज़रूरत पूरी करते और कभी किसी माँगने वाले को ख़ाली हाथ न लौटाते। अगर कुछ होता तो इनायत फ़रमा देते और न होता तो बाद में देने का वादा फ़रमाते। आपकी रफ़ीक़ये ह़यात ह़ज़रते ख़दीजतुल कुब्रा रज़ियल्लाह तआ़ला अ़न्हा ने एक मौक़े पर फ़रमायाः

''हर गिज़ नहीं, अल्लाह आपको कभी रुसवा न फ़रमायेगा। आप सिला रह़मी फ़रमाते हैं, रिश्तों का पास व लिह़ाज़ करते हैं, सच्ची बात करते हैं, दूसरों का बोझ उठाते हैं, मोह़ताजों के काम आते हैं, राहे ह़क़ की तकलीफ़ों और मुसीबतों में मदद करते हैं।''

ह़ज़रते अनस रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो फ़रमाते हैं कि मैं रसूलुल्लाह ﷺ के साथ चल रहा था, आपके जिस्मे अक़्दस पर उस वक़्त नजरान की चादर थी, जिसके किनारे मोटे थे, रास्ते में एक आराबी आपको मिला और आपकी चादरे मुबारक पकड़ कर जोर से खींची जिस से आपकी गरदने मुबारक पर निशान पड़ गये। फिर उस आराबी ने कहा ऐ मोह़म्मद! अल्लाह के माल में से जो कुछ आपके पास है, कुछ मुझे देने का हुक्म कर दें। आप ﷺ ने उसकी तरफ़ मुड़ कर देखा और हँसते हुए फ़रमाया कि इस आ़राबी को दिया जाये।

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने आपको रह़मतुल्लिल आ़लमीन यानी सारी मख़लूक़ के लिए रह़मत बनाकर भेजा है। यही वजह है कि चरिन्द व परिन्द हर एक आपकी पनाह में आते और अपनी ज़बान में अपना दुखड़ा सुनाते।

चुनाँचे बहुत ही मशहूर रिवायत है कि एक ऊँट दौड़ता हुआ

आया और आप ﷺ के सामने सजदे में गिर गया, फिर आपके सामने खड़ा होकर आँसँ बहाने लगा। रसूलुल्लाह ﷺ ने दरयाफ्त फ़रमाया कि इस इस ऊँट का मालिक कौन है? लोगों ने कहा फुलां आदमी। आपने उसे बुलवाया और फ़रमाया कि देखो यह ऊँट तुम्हारी शिकायत कर रहा है। उस शख़्स ने अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह हम बीस साल तक इस ऊँट से बोझ ढोने का काम लेते रहे हैं, हमने इसे ज़िबह करने का इरादा किया है। हुजूर ﷺ ने फ़रमायाः तुमने इसे बहुत बुरा बदला दिया है।, बीस साल तक इस से काम लेने के बाद जब उसकी हड्डियाँ कमज़ोर हो गईं तो तुमने इसे ज़िबह़ करने का इरादा कर लिया। ऊँट के मालिक ने कहा या रसूलल्लाह यह ऊँट आपका हो गया। (मजमउज़्ज़वाइद)

आप ﷺ पूरी ज़िन्दगी लोगों को अमन व शान्ति, प्यार व महब्बत, उख़ुव्वत व भाई चारगी, मुसावात व बराबरी और अ़दल व इंसाफ़ का सबक़ पढ़ाते रहे, आपकी कोशिशों का यह असर हुआ कि वह इंसान जो अब तक अपने रब से ग़ाफ़िल होकर देवी देवताओं के सामने सर झुकाते थे, जो जानवरों जैसी ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे, जो जात–पात की बेजा तक़सीम में पड़े हुए थे, जो यतीमों का माल ग़सब कर जाते थे, कमज़ोरों पर ज़ुल्म करते थे, औ़रतों की इ़ज़्ज़त व इ़स्मत से खेलते थे, छोटी–छोटी बातों पर भड़क उठते थे और पुश्तों जंग जारी रखते थे, जो दिन व रात शराब में बद मस्त रहते थे और कुमार बाज़ी (जुआ बाज़ी) में अपनी औ़रतें तक बेच डालते थे, हुजूर ﷺ ने ऐसे दरिंदा सिफ़त इंसानों को ऐसा बाकमाल बना दिया कि अब वह रात की तन्हाइयों में कभी किसी गुनाह की तरफ़ क़दम भी नहीं बढ़ाते, सिर्फ़ इस ख़ौफ़ से कि उनका रब उन्हें देख रहा है और अगर तनहाई में कोई जुर्म हो जाता तो वह ख़ुद ही हुजूर की अ़दालते आ़लिया में ह़ाज़िर हो कर इक़बाले जुर्म करते और यह आवाज़ लगातेः

''या अल्लाह मुझे मेरे जुर्म की सज़ा दी जाए और मुझे गुनाहों की गन्दगी से पाक व सुथरा कर दिया जाए।''

जब आप ﷺ की उम्र शरीफ़ 63, बरस को पहुँची तो आपने अपने रब की दावत पर लब्बैक कहते हुए 11, हिजरी मुताबिक़ 8,जून 632 ई0 को सोमवार के दिन अपने रफ़ीक़े आला (अल्लाह तआला) से जा मिले। विसाल के वक़्त आपकी जुबाने मुबारक पर यह कलिमात जारी थे '' अस्सलात अस्सलात वमा मलकत ऐमानुकुम'' यानी ऐ लोगो नमाज़ और अपने गुलाम व बान्दियों का ख़याल रखना।

पैग़ामे इंसानियत

ख़ालिक़े कायनात जिसकी सिफ़त 'रब्बुल आ़लमीन' और जिसका वस्फ़ 'अर्रह़मान अर्रह़ीम' है, उसने अपने आख़िरी पैग़म्बर हज़रत मोह़म्मद मुस्तफ़ा ﷺ को सारी कायनात का हादी व मुरब्बी बनाया और उनकी शान 'रह़मतुल्लिल आ़लमीन' फ़रमाई, आप पर जो किताब उतरी वह क़यामत तक के लिए मह़फ़ूज़ व मामून और लोगों को ह़क़ का रास्ता दिखाने वाली है और आपकी ज़बाने फ़ैज़ से जारी होने वाले कलिमात में क़यामत तक होने वाली नस्लों के लिए दारैन की सआ़दत व भलाई और फ़लाह़ व कामरानी का राज़ पोशीदा है। इंसान अगर ख़ुद को आज के तूफ़ान से निकालना चाहता है तो उसे कुछ नया कुछ करने की ज़रूरत नहीं है और न ज़्यादा सर खपाने और दिमाग़सोज़ी करने की ह़ाजत है बल्कि आज की सबसे बड़ी ज़रूरत यह है कि हम चौदह सौ साल पीछे मुड़कर देखें और अ़रब की धरती पर जलवागर होने वाले उस इंसाने कामिल और पैग़म्बरे इंसानियत की ह़याते तय्यिबा और उनकी तालीमात व हिदायात को अपने लिए नमूनये ह़यात (आइडियल) बना लें।

हुज़ूर ﷺ की तालीमात पर एक नज़र

दिल की सफ़ाई: आक़ा अ़लैहिस्सलम ने इरशाद फ़रमाया कि सुनो! जिस्म में गोश्त का एक छोटा सा टुकड़ा है, अगर वह सही है तो इंसान सही है और वह सही नहीं है तो पूरा इंसान बिगड़ा हुआ है। (बुख़ारी शरीफ़)

ज़बान की हिफ़ाज़त: आक़ा अ़लैहिस्सलम ने इरशाद फ़रमाया कि बन्दा ईमान की ह़क़ीक़त को नहीं पा सकता जब तक वह अपनी ज़बान को अपने कंटरौल में न रखे।

(मकारिमुल अख़लाक़ लिलख़राइती)

एक शख़्स ने हुज़ूर ﷺ की बारगाह में अ़र्ज किया या रसूलल्लाह फुलाँ औरत बहुत नमाज़ व रोज़ा अदा करती है, सदका व ख़ैरात भी करती है मगर उसकी ज़बान से उसके पड़ोसी परेशान रहते हैं। हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया कि 'जहन्नम में है'। हुज़ूर ﷺ की बारगाह में एक औरत का ज़िक्र हुआ कि वह नमाज़ व रोज़ा तो ज़्यादा नहीं अदा करती, सदक़ा व ख़ैरात भी कम करती है मगर उसकी ज़बान से उसके पड़ोस के लोग परेशान नहीं रहते। आप ﷺ ने फ़रमाया कि वह जन्नत में है। (शोबुल ईमान)

बदगुमानी से बचे: आक़ा अ़लैहिस्सलम ने इरशाद फ़रमाया कि सुनो! किसी से बदगुमानी न करो क्योंकि बदगुमानी सबसे बड़ा झूट है। किसी का ऐब तलाश मत करो, चुपके से किसी की बात न सुनो, दुनियादारी में एक–दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश न करो, हसद न करो, एक–दूसरे पर गुस्सा मत करो, आपस में तअ़ल्लुक़ न तोड़ो, बल्कि तुम सब अल्लाह के बन्दे और आपस में भाई भाई हो जाओ। (मुसलिम शरीफ़)

किसी की एबजोई न करे: आक़ा अ़लैहिस्सलम ने इरशाद फ़रमाया कि जो आदमी अपने भाई की एबजोई करता है,

अल्लाह उसकी एबजोई फ़रमाता है और अल्लाह की एबजोई क्या है? वह ऐसे शख़्स को उसके घर के अन्दर रुस्वा फ़रमा देता है। (तरतीबुल अमाली लिश्शजरी)

किसी का एब न खोले: आक़ा अ़लैहिस्सलम ने इरशाद फ़रमाया कि जो बन्दा इस दनिया में किसी बन्दे का एब छुपाता है कल बरोज़े क़यामत अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त उसके एब की परदापोशी फ़रमायेगा। (मुस्तदरके ह़ाकिम)

किसी की ग़ीबत न करे: आक़ा अ़लैहिस्सलम ने इरशाद फ़रमाया कि कोई किसी की ग़ीबत न करे, क्या तुम में से कोई अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाना पसन्द करेगा? नहीं तुम उसे कभी पसन्द न करोगे। (सूरतुल हुजुरात)

ग़ीबत क्या है?: पीठ पीछे किसी की ऐसी कमी को बयान करना जो उसके अन्दर मौजूद हो और वह सुन ले तो बुरा जाने, जैसे किसी अँधे को अँधा कहना वग़ैरह।

चुग़ली न खाये: आक़ा अ़लैहिस्सलम ने इरशाद फ़रमाया कि बदतरीन लोग वह हैं जो चुग़ली खाते हैं, दोस्तों के दरमियान झगड़ा कराते हैं और दूसरों के एब तलाश करते हैं।

(अदबुद्दुनिया वद्दीन लिलह़सन अलबसरी)

दोग़ली पालीसी इख़्तियार न करे: आक़ा अ़लैहिस्सलम ने इरशाद फ़रमाया कि क़यामत के रोज़ बदतरीन आदमी वह होगा जो दो मुँह रखता है, इसके मुँह पर इसकी बात कहता और उसके मुँह पर उसकी बात कहता। (बुख़ारी शरीफ़)

कोई किसी से ह़सद न करे: आक़ा अ़लैहिस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया कि ह़सद और जलन नेकियों को इस तरह़ खा जाते हैं जिस तरह़ आग लकड़ी को खा जाती है। (तिरमिज़ी शरीफ़)

किसी को धोखा न दे: आक़ा अ़लैहिस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया कि कल क़यामत के दिन जब अल्लाह तआ़ला अव्वलीन

व आख़ेरीन को जमा फ़रमायेगा तो धोखा देने वालों के लिए एक झन्डा नसब किया जायेगा यानी कल सरे हश्र धोखा देने वाले रुस्वा होंगे।

अ़ब्दुल्लाह इब्ने अबी ह़स्मा कहते हैं कि एलाने नुबुव्वत से पहले मैंने हुज़ूर ﷺ से ख़रीदो फ़रोख़्त का मुआ़मला किया, मेरे ज़िम्मे कुछ रह गया था, मैंने वादा किया कि आप यहाँ ठहरें मैं अभी आता हूँ। मैं घर पहुँचा और भूल गया, तीन दिन बाद मुझे ख़्याल आया, मैं दौड़ता हुआ आपके पास पहुँचा, देखा कि आप उसी जगह खड़े हैं, मुझे देखकर आपने सिर्फ़ इतना फ़रमायाः ''तूने मझे मशक़्क़त में डाल दिया'' तीन दिन से यहाँ तेरे इन्तिज़ार में खड़ा हूँ। (सुबुलुल हुदा वर्रशाद)

ख़यानत न करे: आक़ा अ़लैहिस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया कि जो तेरे पास अमानत रखे उसे उसकी अमानत अदा कर और जो तेरे साथ ख़यानत करे तू उसके साथ ख़यानत न कर।

(तिरमिज़ी शरीफ़)

ग़ुस्सा पी जाए: आक़ा अ़लैहिस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया कि बहादुर वह नहीं जो किसी को पछाड़ दे, बहादुर वह है जो ग़ुस्से के वक़्त ख़ुद को क़ाबू में रखे।

तकब्बुर व ग़ुरूर न करे: आक़ा अ़लैहिस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया कि जिसके दिल में ज़र्रा बराबर ग़ुरूर होगा वह जन्नत में नहीं जायेगा। (मुस्लिम शरीफ़)

तकब्बुर क्या है?: आक़ा अ़लैहिस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया कि तकब्बुर यह है कि किसी के हक़ को न माने और अपने मुक़ाबले में दूसरों को ह़क़ीर जानें। (मुस्लिम शरीफ़)

आ़जिज़ी इख़्तियार करे और ख़ुद को किसी से बड़ा न जाने: आक़ा अ़लैहिस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया कि जो अपने आपको दूसरों से बेहतर समझेगा अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त उसे गिरा देगा,

और जो शख़्स अल्लाह के ख़ौफ़ से आ़जिज़ी इख़्तियार करेगा अल्लाह रब्बुलइ़ज़्ज़त उसे बुलन्द फ़रमायेगा।

(शरहुस्सुन्ना लिलबग़वी)

हर इंसान बल्कि अल्लाह की हर मख़लूक़ का एहतिराम करे: आक़ा अ़लैहिस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया कि सारी मख़्लूक़ अल्लाह तआ़ला का कुन्बा है, और अल्लाह के नज़दीक सारी मख़्लूक़ में सबसे ज़्यादा महबूब वह है जो असकी मख़्लूक़ को सबसे ज़्यादा फ़ायदा बख़्शे। (अलमोजमुल कबीर लित्तबरानी)

हुस्ने अख़्लाक़ से पेश आये: आक़ा अ़लैहिस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया कि क़यामत के दिन मीज़ाने अ़मल में अच्छे अख़्लाक़ से ज़्यादा भारी कोई अ़मल न होगा। (अलअदबुल मुफ़रद)

बुराई का बदला भलाई से दे: आक़ा अ़लैहिस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया कि इम्मआ़ न बनो यानी यह न कहो कि अगर लोग भलाई करेंगे तो हम भलाई करेंगे और अगर लाग ज़ुल्म करेंगे तो हम ज़ुल्म करेंगे, अलबत्ता अपने आपको इस बात का आ़दी बनाओ कि जो तुम्हारे साथ अच्छा करे उसके साथ अच्छा करोगे और जो तुम्हारे साथ बुरा करे उसके साथ तुम बरा न करोगे। (शरहुसुन्ना लिलबग़वी)

दूसरों की हाजत पूरी करे: आक़ा अ़लैहिस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह बन्दे की ज़रूरत पूरी करने मे रहता है जब तक बन्दा अपने भाई की ज़रूरत पूरी करने में रहता है। (अस्सुननुल कुब्रा लिन्निसई)

मुसीबत में दूसरों के काम आये: आक़ा अ़लैहिस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया कि जो आदमी अपने भाई की एक मुसीबत दूर करेगा अल्लाह तआ़ला उसे क़यामत की मुसीबत से निजात देगा। (अस्सुननुल कुब्रा लिन्निसई)

किसी को तकलीफ़ न दे: आक़ा अ़लैहिस्सलाम ने इरशाद

फ़रमाया कि अल्लाह के बन्दों को तकलीफ़ न पहुँचाओ, उन्हें आर न दिलाओ और न उनकी ऐबजोई करो। (मुसनदे अहमद)

रहमत व शफ़क़त का बरताओ करो: आक़ा अलैहिस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला उस पर रहम नहीं फ़रमाता जो लोगों पर रहम नहीं करता। (बुख़री शरीफ़)

मुआफ़ करने और नज़र अंदाज़ करने से काम ले: आग़ाज़े जिन्दगी से लेकर विसाल तक आक़ा अलैहिस्सलाम की यह शान रही कि आपने सख़्त से सख़्तगीर दुश्मनों को भी मुआफ़ फ़रमा दिया।

''जंगे उहद में हुज़ूर पुरनूर ﷺ के दन्दाने मुबारक शहीद किये गये, रुख़े अनवर को ज़ख़्मी किया गया, ख़ुद (ढाल) की कड़ियाँ नाज़ुक रुख़सार को काटती हुई दन्दाने मुबारक में पेवस्त हो गईं, ख़ून उबल–उबल कर बहने लगा, सहाबा ने अर्ज़ की या रसूलल्लाह इन ज़ालिमों के लिए हिलाकत की दुआ कर देते तो ग़ज़बे ख़ुदावन्दी उन्हें नीस्त व नाबूद कर देता। रहमते मुजस्सम ने अपने जाँनिसार सहाबये किराम से इरशाद फ़रमाया कि ऐ मेरे सहाबा! मैं लानत भेजने के लिए नहीं भेजा गया हूँ, बल्कि सरापा रहमत बनाकर भेजा गया हूँ। इस इरशाद के बाद अपने मुबारक हाथ अपने रब की बारगाह में फैला देते हैं और इल्तिजा करते हैं कि ऐ अल्लाह! मेरी इस क़ौम को हिदायत दे, बेशक वह नादान है। (शोबुल ईमान)

ताइफ़ की सरज़मीन पर हुज़ूर ﷺ के जिस्मे अक़दस पर पत्थर बरसाये गये, चेहरा ज़ख़्मी किया गया, आपका जिस्म ख़ून में लहूलहान हो गया, नालैने मुबारक ख़ून से भर गये, एक मरतबा हज़रते आयशा ने पूछा कि या रसूलल्लाह! आपको उहद की जन्ग में जो तकलीफ़ पहुँची, क्या उससे भी ज़्यदा कभी तकलीफ़ पहुँची? हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया कि हाँ

आयशा! ताइफ़ की सरज़मीन पर। लेकिन हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम की शाने करीमी व रहीमी यह थी कि जिब्रील अ़लैहिस्सलाम के साथ पहाड़ो का एक फरिश्ता हाज़िर हुआ और उसने कहा कि अगर आप हुक्म करे तो ताइफ़ वालों पर इर्द–गिर्द के पहाड़ ढा दूँ ताकि वह हलाक हो जएँ। हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि नहीं, बल्कि मुझे अपने रब पर पूरा भरोसा है कि वह उनकी पुश्त से ऐसे बच्चों को पैदा फ़रमायेगा जो अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी और को पूजने वाले न होंगे।

फिर फत्हे मक्का का मन्ज़र मुलाहज़ा कीजिए, आज हुज़ूर ﷺ के सापने वह लोग खड़े हैं जिन्होंने आपको अपने वतन से निकल जाने पर मजबूर कर दिया था, वह भी हैं जिन्होंने तीन साल तक ख़ान्दाने रिसालत का समाजी बाइकाट किया था, वह लोग भी खड़े हैं जिन्होंने खुबाब व अ़म्मार की पीठ दाग़ी थी, वह लोग भी हैं जिन्होंने हज़रते ज़ैनब का ह़मल ज़ाये किया था, वह लोग भी हैं जो हज़रते बिलाल को उस सरज़मीन पर रस्सियाँ बाँध कर तपती रेत पर घसीटा करते थे, आज हुज़ूर ﷺ के सामने वह भी हैं जिन्होंने हुज़ूर ﷺ के प्यारे चचा सय्यिदुश्शोहदा हज़रते अमीरे ह़मज़ा का कलेजा चबाया था। हुज़ूर ﷺ उनकी तरफ़ मुतवज्जे होते हैं और पूछते हैं कि लोगो! बताओ आज मैं तुम्हारे साथ क्या करने वाला हूँ? सब एक ज़बान होकर कहने लगे आप तो करीम इब्ने करीम हैं। हुज़ूर ﷺ एक लफ्ज़ में सबको मुआ़फ़ फ़रमा देते हैं और फ़रमाते हैं कि जाओ तुम सब आज़ाद हो।

आ़म मुसावात और बराबरी का मुआ़मला: प्यारे आक़ा अ़लैहिस्सलाम की तालीम यह थी कि हसब व नसब, ओहदा और मन्सब, असर व रुसूख़ और माल व दौलत की बिना पर कोई बड़ा नहीं होता। हाँ अगर कोई बड़ा होता है तो सिर्फ़ तक़वा और नेकी की बिना पर होता है।

चुनाँचे आप ﷺ का इरशाद हैः

''लोगो सुनो! किसी अ़रबी को किसी अ़जमी पर, किसी अ़जमी को किसी अ़रबी पर, किसी गोरे को किसी काले पर और किसी काले को किसी गोरे पर कोई बरतरी ह़ासिल नहीं है सिवाए तक़्वा के। आक़ा अ़लैहिस्सलाम ने यह भी इरशाद फ़रमाया कि सारे इंसान कँघी के दानों की तरह़ बराबर हैं।''

एक रईस घराने की औ़रत ने किसी का हार चुरा लिया था। इस्लामी क़ानून यह है कि चोर का हाथ काटा जाये, लिहाज़ा हुज़ूर ﷺ ने उस औ़रत के हाथ काटने का हुक्म जारी फ़रमाया, लोगों की कोशिश यह हुई कि इस औ़रत का तअ़ल्लुक़ अमीर कबीर घराने से है, किसी तरह़ इसे बचा लिया जाए। हुज़ूर ﷺ सख़्त नाराज़ हुए और बरसरे मिम्बर जल्वा अफ़रोज़ होकर यह ख़ुत्बा इरशाद फ़रमायाः

''सुनो! तुमसे पहले के लोग हलाक हो गये, उसकी वजह यह थी कि अगर किसी इ़ज़्ज़त वाले घराने का फ़र्द चोरी का जुर्म करता तो उसे मुआ़फ़ कर दिया जाता और अगर कमज़ोर तबक़े का आदमी यह जुर्म करता तो उसे सख़्त सज़ा दी जाती। क़सम है उस रब्बे ज़ुलजलाल की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है अगर तुम्हारे रसूल मोह़म्मद की बेटी फ़रतिमा भी किसी का हार चुराती तो उसका भी हाथ काट डालता।''

इंसानी हुकूक़

पैग़म्बरे इंसानियत मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह ﷺ की तालीमात में इंसानी हुकूक़ के बारे में जो तफ्सीलात मिलती हैं वह किसी भी क़ानून और मज़हब में मौजूद नहीं है। पैग़म्बरे इंसानियत ﷺ ने अपनों के हुकूक़ भी बताए तो बेगानों के हुकूक़ से भी अगाह किया, मर्दों के हुकूक़ भी इरशाद फ़रमाये तो औरतों के हुकूक़ से भी रूशनास कराया, बच्चो के हुकूक़ भी वाज़ेह किए तो बूढ़ों को भी उनके हुकूक़ दिलाए, अलगरज़ यह कि इंसानी तबक़ात को कोई ऐसा फ़र्द नहीं है जिसको आप ﷺ ने फ़रामोश किया हो और उसके हुकूक़ बयान न फ़रमाये हों। आप ﷺ ने सिर्फ़ इंसान ही नहीं बल्कि बेज़बान जानवरों, बेजान चीज़ों और नज़र न आने वाली मख़लूक़ के हुकूक़ से भी अहले दुनिया को रूशनास कराया। बल्कि आप ﷺ ने **'मख़लूक़ अल्लाह की अ़याल है'** का बड़ा तसव्वुर देकर गोया इस जानिब इशारा किया कि इंसान अल्लाह की पैदा की हुई किसी भी चीज़ को हक़ीर न जाने। बल्कि कायनात में बिखरी हुई हर चीज़ के साथ ऐसा बरताओ करे और हिफ़ाज़त का ऐसा अंदाज़ अपनाये जैसे वह अपने किसी फ़र्द या किसी सामान की हिफ़ाज़त करता है। हुज़ूर ﷺ ने अपने एक इरशाद में फ़रमाया कि मुफलिस दर अस्ल वह नहीं जिसके पास रुपये पैसे न हों बल्कि मुफ़लिस अस्ल में वह है जो दूसरों का हक़ ग़सब करता है। हुकूक़ की अदायगी पर ज़ोर देते हुए एक मौक़े पर आपने इरशाद फ़रमाया कि कल क़यामत के दिन हर हक़दार को उसका हक़ दिलाया जायेगा यहाँ तक कि एक बेसींग वाली बकरी एक सींग वाली बकरी के पास लाई जायेगी।

नीचे मुख़्तसर तौर पर बाज़ इंसानी तबक़ों के ह़वाले से हुज़ूर ﷺ के इरशादात व फ़रामीन नक़्ल किये जाते हैं जिनसे यह अंदाज़ा हो जायेगा कि यक़ीनन दुनिया में आज भी यह मौह़ाल पैदा किया जा सकता है कि एक औ़रत तनहा दूर दराज़ मक़ाम तक का सफ़र करेगी मगर उसके दिल में सिवाये अल्लाह के किसी और का ख़ौफ़ न होगा।

रिश्तेदारों के हुक़ूक़ ------ सिला रह़मी

पैग़मबरे इंसानियत ﷺ की तालीमात में रिश्तों का बड़ा पास व लिह़ाज़ और सिला रह़मी की बड़ी ताकीद आई है। आक़ा अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया कि कल क़यामत के दिन ऐसा कोई शख़्स जन्नत में दाख़िल नहीं होगा जिसने अपने रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ तोड़ा होगा। (अलअदबुल मुफ़रद) एक मौक़े पर आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि उस क़ौम पर रह़मत नाज़िल नहीं होती जिसमें रिश्ता ख़त्म करने वाला कोई शख़्स मौजूद हो। (अल–अदबुल मुफ़रद) सिला रह़मी का क्या मेयार (पैमाना) होना चाहिए हुज़ूर ﷺ ने उसे अपने एक बयान में इस तरह बयान फ़रमाया है कि सिला रह़मी यह नहीं कि जो रिश्ता ख़त्म करे उससे रिश्ता ख़त्म कर दिया जाये बल्कि सिला रह़मी यह है कि आदमी अपना रिश्ता उससे क़ाइम रखे जो रिश्ते तोड़ता है। (बुख़ारी शरीफ़) सिला रह़मी के तअ़ल्लुक़ से हुज़ूर ﷺ की हिदायत यह भी थी कि रिश्तेदारों के दोस्तों से भी हुस्ने सुलूक (अच्छा बरताओ) किया जाए। हज़रते आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाह तआ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं कि जब कोई बकरी ज़िबह़ की जाती तो हुज़ूर ﷺ फ़रमाते कुछ गोश्त खदीजा की सहेलियों को भी भेज देना। (अल–शिफ़ा क़ाज़ी अ़याज़)

हज़रते ह़लीमा सादिया आप ﷺ की रज़ाई (दूध पिलाने वाली) माँ थीं, वह जब आपके पास आतीं तो आप ख़ुद उनके

लिए अपनी चादर बिछा देते और उनकी बड़ी ताज़ीम व तकरीम फ़रमाते। हज़रते सुवैबा जो सौबिया के नाम से मशहूर हैं, जिनको आप ﷺ के चचा अबू लहब ने आपकी विलादत की ख़बर सुनाने की ख़ुशी में आज़ाद कर दिया था, उन्होंने सिर्फ़ चन्द रोज़ आप ﷺ को दूध पिलाया था मगर हुज़ूर ﷺ हमेशा उनके पास तोहफ़े भेजा करते थे और जब उनका इन्तिक़ाल हो गया तो लोगों से दरयाफ़्त किया कि क्या उनके रिश्तेदारों में कोई बाक़ी है? लोगों ने जवाब दिया नहीं। सवाल का मक़सद यह था कि अगर उनके रिश्तेदारों में कोई बाक़ी होता तो हुज़ूर ﷺ उनकी तरफ़ हदया और तोहफ़ा भेजते। (ज़ियाउन्नबी)

पड़ोसियों के हुक़ूक़

पड़ोसियों के तअ़ल्लुक़ से हुज़ूर ﷺ ने बड़ी सख़्त ताकीद फ़रमाई है। हज़रते आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहो त़आ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं कि पड़ोसियों के बारे में आप ﷺ सख़्त ताकीद फ़रमाते थे यहाँ तक कि मुझे गुमान होने लगा कि वारेसीन में पड़ोसी हज़रात भी शामिल कर दिये जायेंगे। पड़ोसियों की हिफ़ाज़त के बारे में हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि क़सम ख़ुदा की वह ईमान वाला नहीं है, क़सम ख़ुदा की वह ईमान वाला नहीं, क़सम ख़ुदा की वह ईमान वाला नही, लोगों ने पूछा या रसूलल्लाह कौन? फ़रमाया वह आदमी जिससे उसका पड़ोसी तकलीफ़ में रहे। (मुसनदे अह़मद इब्ने ह़म्बल)

हुज़ूर ﷺ ने औरतों को मुख़ातब करके फ़रमाया कि औरतो! तुम पड़ोस की किसी औ़रत को हक़ीर न जानों, तुम उसके पास भेजो अगर चे बकरी की एक हड्डी ही क्यों न हो। (बुख़ारी शरीफ़)

हज़रते अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो से आप ﷺ ने फ़रमाया कि ऐ अबूज़र! जब सालन पकाया करो तो शोरबा ज़्यादा रखो और उसे अपने पड़ोसियों में तक़सीम करो। (मुसनदे

अह़मद इब्ने ह़म्बल) जो लोग पड़ोरयों के हुकूक़ का ख़्याल नहीं रखते हैं हुज़ूर ﷺ ने उनके लिए सख़्त वईद (सज़ा का वादा) सुनाई और फ़रमाया कि मोमिन वह शख़्स नहीं है जो खुद तो मेट भर करके खाए और उसके बग़ल में उसका पड़ोसी भूखा सो जाए। (मुसनदे अबी याला) एक और मौक़े पर हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया कि कोई पड़ोसी अपने पड़ोसी को दीवार में कील ठोंकने से न रोके। हज़रते अबू हुरैरह अपने प्यारे आक़ा की इस प्यारी ह़दीस को नक़्ल करने के बाद फ़रमाते थे कि क़सम खुदा अगर तुम लोग ऐसा करोगे तो हम तुम्हारी गरदनों में कील ठोंक देंगे। (बख़ारी शरीफ़)

औरतों के हुकूक़ का तहफ़्फ़ुज़

पैग़म्बरे इंसानियत ﷺ की आमद से पहले समाज में औरतों की क्या हैसियत थी? तारीख़ से थोड़ी बहुत वाक़फ़ियत रखने वाले भी अच्छी तरह़ जानते हैं, मगर आप ﷺ ने औरतों को मुआशरे का एक अहम ह़िस्सा और बड़ा मिम्बर क़रार दिया और उनके हुकूक़ बड़ी तफ़्सील से बयान फ़रमाये। माँ की हैसियत से आप ﷺ ने औरतों की अज़मत बयान की और इरशाद फ़रमाया कि जन्नत माँ के क़दमों तले है। (अल–कुना वल–असमा लिद्दौलाबी) बीवी की हैसियत से औरत की क़द्र व मन्ज़िलत को बयान करते हुए इरशाद फ़रमाया कि कोई शौहर अपनी बीवी से नफ़रत न करे, अगर उसकी एक आदत अच्छी न लगे तो उसकी दूसरी आदत से राज़ी हो जाये। (मुसलिम शरीफ़) बेटियों के हुकूक़ इस तरह़ बयान फ़रमाये कि जो दो बच्चियों की परवरिश करे यहाँ तक कि वह शादी की उम्र को पहुँच जायें तो कल बरोज़े क़यामत एसा शख़्स और मैं इन दो मिली हुई उँगलियों की तरह़ साथ–साथ होंगे। (मुसलिम शरीफ़) अलगरज़ यह कि समाज में औरते जिन हैसियतों से जानी जाती हैं हुज़ूर ﷺ ने हर हैरिसयत के लिहाज़ से औरतों के हुकूक़ वाज़ेह फ़रमाये। यहाँ तक कि

वह औ़रत जिसे शादी के बाद तलाक़ दे दी गई हो आपने उसे भी फ़रामोश न किया और फ़रमाया कि सबसे बड़ी नेकी यह है कि तेरी बेटी तेरे पास लौटाई गई हो (उसे तलाक़ दे दी गई हो या उसका शौहर मर गया हो) और तेरे अ़लावा उसकी किफ़ालत कोई दूसरा न करे।

कमज़ोर अफ़राद के हुक़ूक़

बहुत से लोग ऐसे होते हैं जिनको समाज में किसी शुमार में नहीं रखा जाता है, लोग आ़म तौर पर उन्हें नज़र अंदाज़ कर जाते हैं, जो मोह़ताजी की ज़िन्दगी गुज़ारते हैं, जिनके दामन पर ग़ुलामी व मज़दूरी का सिक्का बन्धा होता है, यतीमी व बेवगी का दाग़ जिनको समाज में हक़ीर व पस्त बना देता है, हुज़ूर ﷺ ने मुआ़शरे के ऐसे कमज़ोर अफ़राद का हर क़दम पर बड़ा ख़्याल रखा और उन्हें वह हुक़ूक़ व मुराआ़त अ़ता फ़रमाईं कि कल तक जो ग़ुलामी की ज़िन्दगी बसर कर रहे थे आज वह अमीरों के वाली बन गये हैं। ऐसे अफ़राद के बारे में हुज़ूर ﷺ की हिदायात मुलाह़ज़ा करें।

आपने ग़ुलामों के बारे में फ़रमाया है कि सुनो और पैरवी करो अगर चे तुमहारा ऐसा ह़ब्शी ग़ुलाम ही क्यों न हो जिसका सर किशमिश की तरह़ हो। (बुख़ारी शरीफ़) बेवा और मिस्कीन के बारे में फ़रमाया कि बेवा और मिस्कीन की मदद करने वाला उस शख़्स की तरह़ है जो पूरी–पूरी रात इबादत करता है और मुसलसल रोज़े रखता है। (मुसलिम शरीफ़) कमज़ोरों के बारे में फ़रमाया कि मुझे कमज़ोर और मजबूर व लाचार लोगों के दरमियान तलाश करो और सुनो! मुम्हें जो भी रिज़्क़ दिया जाता है और जो कुछ भी मदद की जाती है तो इन्हीं कमज़ोरों की बदौलत की जाती है। (सुनने अबूदाऊद), मज़लूमों के बारे में फ़रमाया कि मज़लूम की आह से बचो क्योंकि उसके और उसके

रब के दरमियान कोई हिजाब नहीं है। (सुनने इब्ने माजा) मज़दूरों के बारे में फ़रमाया कि पसीना ख़ुश्क होने से पहले मज़दूर की मज़दूरी अदा करो। (सुनने इब्ने माजा)

ग़ैर मुस्लिमों के हुकूक़-- इसलामी रवादारी

पैग़म्बरे इंसानियत ﷺ अपने रब की जानिब से जो तालीमात लेकर आये उसकी बुनियाद इंसानी ताज़ीम और एहतिरामे आदमियत पर है। एक शख़्स का क़त्ल ख़्वाह वह मुसलिम हो या ग़ैर मुसलिम, गो पूरी इंसानियत का क़त्ल है और एक शख़्स की हिफ़ाज़त गोया तमाम इंसानों की हिफ़ाज़त है। अगर कोई ग़ैर मुसलिम पड़ोस में रह रहा हो तो उसके हुकूक़ वही होंगे जो आ़म पड़ोसी को ह़ासिल होते हैं। हुज़ूर ﷺ के एक सह़ाबी हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाह तआ़ला अ़न्हो के घर एक बकरी ज़िबह़ की गई, पड़ोस में एक यहूदी रहता था, उन्होंने घर वालों से दरयाफ्त किया कि क्या तुम लोगों ने मेरे यहूदी हमसाये को भेजा है? क्योंकि मैने रसूलुल्लाह ﷺ को फ़रमायते हुए सुना है कि मुझे पड़ोसी के साथ नेकी करने की इतनी ताकीद की गई कि मैंने समझा कि पड़ोसी को तर्के का हक़दार बना दिया जाएगा। (इसलाम मे मज़हबी रवादारीः सय्यिद शहाबुद्दीन) हज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने उमर के इस क़ौल से मालूम होता है कि पड़ोसियों के बारे में पैग़म्बरे इंसानियत को जो हिदायात हैं, उनमें मुसलिम व ग़ैर मुसलिम सब शरीक है। हज़रते अस्मा बिन्ते अबूबक्र रज़ियल्लाहो अ़नहो की वालिदा जो अब तक इस्लाम से मुशर्रफ़ न हुई थीं, एक मरतबा उनके पास आईं, हज़रते अस्मा ने हुज़ूर ﷺ से दरयाफ्त किया कि क्या मैं उनके साथ सिला रह़मी का मुआ़मला करूँ? आपने फ़रमाया हाँ, उनके साथ सिलारह़मी का मुआ़मला करो। (मिश्कातुल मसाबीह़) इससे मालूम हुआ कि सिलारह़मी के तअ़ल्लुक़ से आप ﷺ की जो मालूमात हैं, उनमे मुसलिम व ग़ैर मुसलिम

सब बराबर के शरीक हैं। फिर ग़ैर मुसलेमीन के बारे में हुज़ूर ﷺ का यह फ़रमान भी मुलाहज़ा हो कि आपने इरशाद फ़रमाय कि जो आदमी इस्लामी रियासत में रहने वाले किसी भी ग़ैर मुसलिम का क़त्ल करेगा तो कल क़यामत के दिन वह जन्नत की ख़ुश्बू न पायेगा। जबकि जन्न की ख़ुश्बू चालीस की मसाफ़त से महसूस हो जाती है। (बुख़ारी शरीफ़)

पैग़म्बरे इंसानियत ﷺ की ज़िन्दगी में और आप के बाद आपके मानने वालों में हिल्म व बुर्दबारी और ग़ैर मुसलिमों के साथ रवादारी व फ़राख़दिली के जो नमूने मिलते हैं, ज़माना उनकी मिसाल पेश करने से क़ासिर है। मीसाक़े मदीना, सुलह हुदैबिया और फ़तहे मक्का इंसानी तारीख़ के नादिर वाक़ेयात हैं। ग़ैर मुस्लिमीन के तअ़ल्लुक़ से मुख़तलिफ़ जगहों पर आप ﷺ की जो हिदायात हैं, उनमें बाज़ मुलाहज़ा फ़रमायें:

ईसाइयों के बारे में फ़रमाया:

- उनपर कोई नाजाइज़ टेक्स नहीं लगाये जायेंगे।
- उनका कोई पादरी अपने इलाक़े से न निकाला जायेगा।
- किसी ईसाई को अपना मज़हब छोड़ने पर मजबूर नहीं किया जायेगा।
- किसी राहिब को उसके राहिबख़ाने से बाहर न निकाला जायेगा।
- किसी ज़ायर को ज़ियारत के सफ़र से न रोका जायेगा।
- गिरजे मिस्मार नहीं किये जायेंगे।
- अगर ईसाइयों को अपने गिरजाओं और अपनी इबादतगाहों की मरम्मत के लिए या अपने मज़हब के किसी और काम के बारे में मदद की ज़रूरत होगी तो मुसलमान उन्हें इमदाद देगें।
- अगर मुसलमान किसी बाहर के ईसाई से बरसरे जन्ग होंगे तो मुसलमानों की हुदूद के अंदर रहने वाले किसी

ईसाई से उसके मज़हब की बिना पर हिक़ारत का बरताओ नहीं किया जायेगा। अगर कोई मुसलमान किसी ईसाई से ऐसा बरताओ करेगा तो रसूल की नाफ़रमानी का मुरतकिब ठहरेगा।

फ़त्हे मक्का के मौक़े पर आप ﷺ ने आ़म मुआ़फ़ी का ऐलान फ़रमाया और नीचे दिये गये अहकामात जारी किये:

- जो कोई हथियार फेंक दे उसे क़त्ल न किया जाए।
- जो कोई ख़ानये काबा के अन्दर पहुँच जाये उसे क़त्ल न किया जाए
- जो कोई अपने घर में बैठ रहे उसे क़त्ल न किया जाए।
- कोई अबूसुफ़ियान के घर जा रहे, उसे क़त्ल न किया जाए।
- भाग जाने वाले का तआ़कुब न किया जाए।
- किसी ज़ख़्मी को क़त्ल न किया जाए।

मीसाक़े मदीना में मदीने में रहने वाले तमाम मज़ाहिब के मानने वालो के लिए नीचे दिये उसूल बनाये गये:

- अल्लाह तआ़ला की हिफ़ाज़त व ज़मानत हर फ़रीक़ को हासिल है।
- उम्मत के ग़ैर मुसलिम मिम्बरों को भी मुसलमानों की तरह़ सियासी और मज़हबी हुकूक़ हासिल हैं। उम्मत के हर गिरोह को मुकम्मल मज़हबी आज़ादी और अँदरूनी ख़ुदमुख़्तारी ह़ासिल है।
- उम्मत के दुश्मनों से मुसलिम और ग़ैर मुसलिम दोनों मिलकर जंग करेंगे और सब मिलकर जंग का ख़र्च बर्दाश्त करेंगे। मुसलिम और ग़ैर मुसलिम एक–दूसरे के बहीख़्वाह (भलाई चाहने वाले) हैं। (माख़ूज़: रसूले अकरम की रवादारी: ह़ाफ़िज़ सानी)

ग़ैर मुसलेमीन के एतेराफ़ात

जिन लोगों ने भी इंसाफ़ की ऐनक़ लगाकर और तअ़स्सुब व तन्गनज़री से ख़ाली होकर हुज़ूर ﷺ की ह़याते तय्यिबा को पढ़ा और आपकी तालीमात व हिदायात और आपके लाये हुए पैग़ाम **'मज़हबे इस्लाम'** का मुतालआ़ (अध्यन) किया वह इस बात का एतेराफ़ किये बग़ैर न रह सके कि पैग़म्बरे इंसानियत हज़रत मोह़म्मद मुस्तफ़ा ﷺ इंसानी तारीख़ की सबसे अज़ीम (बड़ी) शख्सियत थे और दुनिया में अमन व शान्ति का माहौल आप ही की तालीमात से मुमकिन हुआ। नीचे पैग़म्बरे इस्लाम और मज़हबे इस्लाम के ह़वाले से कुछ ग़ैर मुसलेमीन के तअ़स्सुरात (प्रतिक्रियायें) मुलाह़ज़ा करें:

डाक्टर मीख़ाईल, एच हार्ट का एतेराफ़:

''पूरी इंसानी तारीख़ में मोह़म्मद वह वाह़िद शख़्स हैं जो दीनी और दुनियावी एतेबार से ग़ैर मामूली तौर पर कामियाब व कामरान और सरफ़राज़ ठहरे।''

(द.100, बह़वालाः रसूले अकरम की रवादारी)

डाक्टर गस्ताउली बान का एतेराफ़:

''अगर अश्ख़ास (व्यक्तियों) की ज़िन्दगी, बुज़ुर्गी और हैसियत का अंदाज़ा उनके कारनामों से लगाया जा सकता है तो हम कहेंगे कि मोह़म्मद (ﷺ) की ज़ात इंसानी तारीख़ में सबसे बड़ी ज़ात गुज़री है।''

(इस्लाम और मुशतश्रेकीन, बह़ालाः रसूले अकरम की रवादारी)

जान विलियम डिरेपर का एतेराफ़:

''569 ई0 जस्टीनैन की मौत के चार साल बाद सर ज़मीने अ़रब के शहरे मक्का में वह हस्ती पैदा हुई जिसने नस्ले इंसानी पर सबसे ज़्यादा असर डाला।'' (दावते इसलामः बह़वालाः रसूले अकरम की रवादारी)

कौंसटन वरजील जारजिओ का एतेराफ़:

''आज़ाद किये हुए ग़ुलामों बिलाले ह़ब्शी और उसामा का **'सय्यदना'** कहलाना और अबूबक्र व उमर का मिटटी गारा ढोना इस्लामी मुसावात के ही नतीजे हो सकते हैं। उसके मुक़ाबले में इंकिलाबे फ्रांस के मुसावाते इंसानी के दावे कुछ हैसियत नहीं रखते।''

(पैग़मबरे इस्लाम ग़ैर मुसलिमों की नज़र में)

जार्ज बरनाडशा का एतेराफ़:

''मैं रसूले अकरम ﷺ के दीन को हमेशा ही इज़्ज़त की निगाह से देखता हूँ। यह इल्ज़ाम बिलकुल बेबुनियाद है कि आप ईसाइयों के दुश्मन थे। मैंने इस ह़ैरतअंगेज़ शख्सियत की सवानेह हयात (जीवनी) का गहरा मुतालआ़ किया है, मेरी राय में आप सारे ही इंसानों के मुह़ाफ़िज़ थे।'' (सीरतुन्बीः तालिब हुसेन किरपाली)

स्वामी लक्ष्मी प्रसाद का एतेराफ़:

''दुनिया की उन जलीलुल क़द्र हस्तियों में जिनके अस्माये गिरामी हाथ की उँगलियों पर गिने जा सकते हैं, रह़मतुल्लिल आ़लमीन, शफ़ीउल मुज़नेबीन, सय्यिदुल मुरसलीन, ख़ातमुन्नबिय्यीन, फ़ाख़्रे मौजूदात, सरवरे कायनात, हज़रत मोह़म्मद मुस्तफ़ा अह़मतदे मुजतबा ﷺ को कई एतेबार से एक ख़ास इम्तियाज़ ह़ासिल है।''

(अ़रबा का चाँदः बह़ावालाः रसूले अकरम की रवादारी)

आर्नाल्ड टुआइन बी का एतेराफ़:

''जदीद तहज़ीब ने माद्दी एतेबार से इंसान को बहुत कुछ दिया है मगर उसके साथ साथ उसने बहुत से मसाइल भी पैदा किये हैं, जिनका ह़ल बज़ाहिर उनके पास नहीं। इन मसाइल में से दो चीज़ें – नस्ली इम्तियाज़ और शराब नोशी– हैं। इन दोनों बुराइयों को ख़त्म करने में मग़रिबी तहज़ीब नाकाम हो चुकी है और इस्लाम की तारीख़ बताती है कि

उसने इन दोनों बुराइयों को ख़त्म करने में पूरी कामयाबी ह़ासिल की है..... अगर यहाँ इस्लाम को इख़्तियार कर लिया जाए तो वह अख़लाक़ ओर समाजी एतेबार से निहायत मुफ़ीद साबित होगा। मुसलमानों में नस्ली इम्तियाज़ का ख़त्म हो जाना इस्लाम का बड़ा अख़लाक़ी कारनमा है और आज की दुनिया में इस्लाम के उन उसूलों की तबलीग़ की सख़्त ज़रूरत बन गई है। (अ़ज़मते इस्लामः180)

हिन्दू शायर शीश चन्द्र सकसैना का ख़िराजे महब्बतः

यह ज़ाते मुक़द्दस तो है हर इंसान की महबूब
मुसलिम ही नही वाबस्तये दामाने मोह़म्मद

महाराजा श्री कृष्ण प्रसाद का खिराजे अ़क़ीदतः

शाद हर वक़्त कुनद ज़िक्रे तो हम कुदसी
सय्येदी अन्ता ह़बीबी व तबीबी क़लबी

लाला रामस्वरुम शैदा का ख़िराजे महब्बत :

तेरी अलफ़ाज़ो मआ़नी से है बालातर सना
शान में तेरी कहा शम्सुद्दह़ा बदरुद्दुजा

(माख़ूज़ः रसूले अकरम की रवादारी)

————————इति वारताहः————————